विश्व हिंदी समाचार
Vishwa Hindi Samachar

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष : 10 | अंक : 40 | दिसंबर, 2017

मॉरीशस में 'सृजनात्मक लेखन कार्यशाला'

11-12 दिसंबर, 2017 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय एवं भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के तत्वावधान में इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फ़ेनिक्स में दो दिवसीय 'सृजनात्मक लेखन कार्यशाला' का आयोजन किया। कार्यशाला हेतु इंग्लैंड से श्री तेजेन्द्र कुमार शर्मा, सचिव, कथा यू.के. तथा भारत से प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा एवं मॉरीशस से डॉ. हेमराज सुन्दर, वरिष्ठ व्याख्याता, महात्मा गांधी संस्थान तथा श्री सूर्यदेव सिबोरत, वरिष्ठ हिंदी लेखक को विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया।

पृ. 2-3

विश्व हिंदी न्यास का 17वाँ वार्षिक अधिवेशन

7 अक्टूबर, 2017 को फ्रीमाँट, कैलिफ़ोर्निया में विश्व हिंदी न्यास का 17वाँ वार्षिक अधिवेशन संपन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. सर्वज्ञ द्विवेदी रहे। समारोह में उपस्थित तथा कई देशों में प्राध्यापक रह चुके डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण ने जापान, ट्रिनिडाड, मॉरीशस में हिंदी शिक्षण पर अपने अनुभवों के विषय में वार्ता दी।

पृ. 8

मॉरीशस में अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

5 नवंबर, 2017 को इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फ़ेनिक्स, मॉरीशस में 'हिंदी का वैश्विक स्वरूप' विषय पर अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। भारतीय उच्चायोग, विश्व हिंदी सचिवालय, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, महात्मा गांधी संस्थान तथा आधारशिला फ़ाउंडेशन यू.के. इस सम्मेलन के आयोजक थे। सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि मॉरीशस के प्रधान मंत्री माननीय श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ तथा विशिष्ट अतिथि भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अभय ठाकुर रहे।

पृ. 7

ला ट्रोब विश्वविद्यालय में हिंदी कार्यशाला

24 अक्टूबर, 2017 को मेल्बर्न विश्वविद्यालय के ऑस्ट्रेलिया इंडिया इंस्टिट्यूट और ला ट्रोब विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र में डॉ. दिनेश श्रीवास्तव ने 'विक्टोरिया में' और माला मेहता ने 'सिडनी और न्यू साउथ वेल्स में हिंदी के इतिहास और उसकी वर्तमान स्थिति' पर अपने विचार व्यक्त किए।

पृ. 6

ब्रिटिश हिंदी लेखक श्री तेजेंद्र शर्मा को 'मेम्बर ऑव द ऑर्डर ऑव ब्रिटिश एम्पायर' सम्मान

7 दिसंबर, 2017 को बकिंघम पैलेस, लंदन में हिंदी लेखन, हिंदी साहित्य की सेवा और सामुदायिक एकजुटता की गतिविधियों के लिए ब्रिटेन के प्रिंस चार्ल्स के हाथों श्री तेजेंद्र शर्मा को 'मेम्बर ऑव द ऑर्डर ऑव ब्रिटिश एम्पायर' सम्मान से अलंकृत किया गया।

पृ. 13

इस अंक में आगे पढ़ें :

- विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित त्रैमासिक कार्यक्रम, 'विचार-मंच : 'युवकों द्वारा लघुकथा-लेखन' — पृ. 4-5
- हिंदी दिवस 2017 : विश्व भर में — पृ. 5-6
- सम्मेलन, संगोष्ठी, अधिवेशन, समारोह — पृ. 7-10
- लोकार्पण — पृ. 11-12
- सम्मान — पृ. 13-14
- श्रद्धांजलि — पृ. 15
- संपादकीय/अंतरराष्ट्रीय हिंदी एकांकी प्रतियोगिता के परिणाम — पृ. 16

ISSN 1694-2485

मॉरीशस में 'सृजनात्मक लेखन कार्यशाला'

मंच-संचालन करती हुई डॉ. माधुरी रामधारी

11-12 दिसंबर, 2017 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय एवं भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के तत्वावधान में इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फ़ेनिक्स में दो दिवसीय *'सृजनात्मक लेखन कार्यशाला'* का आयोजन किया। कार्यशाला हेतु इंग्लैण्ड से श्री तेजेन्द्र कुमार शर्मा, सचिव, कथा यू.के. तथा भारत से प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा एवं मॉरीशस से डॉ. हेमराज सुन्दर, वरिष्ठ व्याख्याता, महात्मा गांधी संस्थान तथा श्री सूर्यदेव सिबोरत, वरिष्ठ हिंदी लेखक को विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया।

उद्‌घाटन समारोह

11 दिसंबर, 2017 को कार्यशाला के उद्‌घाटन-समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि कार्यवाहक भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री के. डी. देवल रहे तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. उदय नारायण गंगू रहे। इस अवसर पर विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव, प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने स्वागत-भाषण देते हुए इस कार्यशाला के आयोजन के उद्‌देश्यों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि ***"लेखन से युवा वर्ग को जोड़े रखने और उन्हें प्रेरित एवं उत्साहित करने के उद्‌देश्य से यह दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की जा रही है।"*** उन्होंने प्रत्येक अतिथि वक्ता का परिचय भी दिया।

प्रो. आनंद वर्धन शर्मा को प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए भारतीय उपउच्चायुक्त (मॉरीशस) महामहिम श्री के. डी. देवल

मुख्य अतिथि कार्यवाहक भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री के. डी. देवल ने हिंदी के विकास के बारे में बात की - ***"बढ़ते बाज़ारवाद के कारण भारत एवं विदेश में हिंदी का पिछले 50 सालों में विकास हुआ है।"***

विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद् के सदस्य डॉ. उदय नारायण गंगू ने सचिवालय की स्थापना पर बात की तथा सभागार में सभी की उपस्थिति के लिए आभार प्रकट करते हुए होनेवाले सत्रों की चर्चा की।

कथा यू.के. के सचिव श्री तेजेंद्र कुमार शर्मा ने ब्रिटेन तथा विश्व में हिंदी की बढ़ती मान्यता को रेखांकित करते हुए कहा कि ***"ब्रिटेन में जितनी कंपनियाँ हैं, उन सबके सी.ई.ओ. अपने कर्मचारियों व मेनेजरों को हिंदी की वर्किंग नॉलिज लेकर भारत जाने के लिए प्रेरित करते हैं क्योंकि बिना हिंदी के वहाँ उनका काम नहीं चल सकता। हम अपनी पहचान हिंदी के ज़रिए बनाते हैं तथा हिंदी को शुद्धतावादी प्रमाण-पत्र की आवश्यकता नहीं है।"***

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने रचनाकार के लिए सृजनात्मक लेखन की विशेषताओं का उल्लेख किया। उन्होंने सृजनात्मक लेखन को परिभाषित करते हुए तथा हिंदी की मान्यता पर बल देते हुए कहा कि ***"जो लेखन अपने लिए न होकर सब का हो जाए वही सब से बड़ा सृजनात्मक लेखन है।"*** इस सत्र का संचालन डॉ. माधुरी रामधारी ने किया।

द्वितीय सत्र - कहानी-लेखन

(बाएँ से दाएँ) प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, श्री तेजेंद्र कुमार शर्मा, श्रीमती उषा शर्मा व श्री धनराज शम्भु

द्वितीय सत्र कहानी-लेखन पर आधारित रहा। इस सत्र के दौरान प्रो. आनंद वर्धन शर्मा तथा श्री तेजेंद्र कुमार शर्मा ने कहानी लिखने की प्रक्रिया पर बात करते हुए अपनी कहानी का पाठ किया। श्रीमती उषा शर्मा तथा श्री धनराज शम्भु ने भी स्वरचित कहानियों का पाठ किया। डॉ. अलका धनपत तथा डॉ. आभा सिंह ने उन कहानियों पर टिप्पणी करते हुए कहानी-लेखन पर अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र का संचालन प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने किया।

तृतीय सत्र - गीत-लेखन

श्री धननारायण जिऊत निर्मित फ़िल्म 'बोझ' की प्रस्तुति

तृतीय सत्र का विषय गीत-लेखन रहा। श्री तेजेंद्र शर्मा ने *'हिंदी सिनेमा एवं गीत-लेखन'* विषय पर बात करते हुए कहा कि ***"साहित्य को आम आदमी तक ले जाने के लिए सिनेमा एक बहुत बड़ा माध्यम है।"*** श्री निखिल शिबनोत ने अपने गीत 'तेरा पता' की रचना पर बात की। श्रीमती श्वेता बाबुलाल ने स्वरचित गीतों का गान किया तथा गीत-लेखन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ***"एहसास, भाषा और सृजनात्मकता के मिश्रण से गीत की रचना होती है।"*** इसी सत्र के दौरान श्री महेश रामजियावन द्वारा लिखित व निर्देशित फ़िल्म 'द लेजेंड ऑव महेश्वरनाथ टेम्पल' एवं श्री धननारायण जीऊत द्वारा लिखित व निर्देशित फ़िल्म 'बोझ' की प्रस्तुति हुई। इसके उपरान्त श्री तेजेंद्र कुमार शर्मा तथा प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने पूरे सत्र पर अपनी टिप्पणी दी। इस सत्र का संचालन डॉ. माधुरी रामधारी ने किया।

स्वरचित गीत प्रस्तुत करते हुए (बाएँ से दाएँ) श्री निखिल शिबनोथ एवं श्रीमती श्वेता बाबुलाल

द्वितीय दिवस : मंगलवार, 12 दिसंबर 2017 – प्रथम सत्र – क्षणिका-लेखन

दूसरे दिन के प्रथम सत्र का विषय क्षणिका-लेखन रहा। डॉ. हेमराज सुन्दर ने क्षणिका-लेखन के विभिन्न पहलुओं को रेखांकित किया तथा उपस्थित श्रोताओं को लिखने हेतु प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि ''***क्षणिकाओं का विषय विस्तृत होता है। उसमें बड़ी विविधता होती है। कम शब्दों में बड़ी बात कहने की क्षमता क्षणिका में होनी चाहिए, उसकी विशिष्ट कला होनी चाहिए।***'' इसके उपरान्त श्री सोमदत्त काशीनाथ, श्री मानव बुधन, श्रीमती कल्पना लालजी, श्रीमती तीना जगू मोहेश, श्री अरविंद सिंह नेकितसिंह, श्रीमती सविता तिवारी, श्रीमती अंजु घरबरन, डॉ. अलका धनपत और श्रीमती सीता रामयाद ने अपनी क्षणिकाएँ सुनाईं। डॉ. हेमराज सुन्दर एवं प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने विभिन्न प्रतिभागियों की क्षणिकाओं पर अपनी टिप्पणियाँ दीं। इसके उपरान्त परिचर्चा-सत्र हुआ, जिसमें सभी लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस सत्र का संचालन श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी ने किया।

क्षणिका-लेखन पर वक्तव्य देते हुए डॉ. हेमराज सुन्दर

द्वितीय सत्र – लघुकथा-लेखन

लघुकथा-लेखन पर वक्तव्य देते हुए श्री तेजेंद्र कुमार शर्मा

द्वितीय सत्र का विषय लघुकथा-लेखन रहा। श्री तेजेंद्र कुमार शर्मा ने लघुकथा लिखने के तरीकों पर बल देते हुए कहा कि ''**लघुकथा 'गागर में सागर' भर देने वाली विधा है।**'' उन्होंने आधुनिक समाज में लघुकथा-लेखन द्वारा अपने भावों की अभिव्यक्ति की बात कही। इसके पश्चात् श्रीमती समानता अजुबा, श्री मानव बुधन एवं श्रीमती सविता तिवारी ने लघुकथा-पाठ किया, जिनपर श्री तेजेंद्र कुमार शर्मा तथा प्रो. आनंद वर्धन ने टिप्पणी की। डॉ. उदय नारायण गंगू तथा श्री रामदेव धुरंधर ने लघुलथा-लेखन पर अपने-अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र का संचालन प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने किया।

तृतीय सत्र – नाट्य-लेखन एवं रंगमंच

नाट्य-लेखन पर वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए श्री सूर्यदेव सिबोरत

तृतीय सत्र का विषय नाट्य-लेखन एवं रंगमंच रहा। श्री सूर्यदेव सिबोरत ने विषय पर बात करते हुए उसके विभिन्न बिन्दुओं का उल्लेख किया। साथ-साथ उन्होंने मॉरीशसीय संदर्भ में लेखन के उद्देश्य पर भी बल दिया तथा पात्र, संवाद, स्थिति आदि के माध्यम से विषय को श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया। इसके उपरान्त श्रीमती सीता रामयाद, श्री रितेश मोहाबीर, सुश्री नंदिनी झुमक तथा श्री आशेष रामजियावन द्वारा नाट्य प्रस्तुति हुई। श्री सूर्यदेव सिबोरत, श्री तेजेंद्र कुमार शर्मा एवं श्री सुन्दरलाल मितू ने नाट्य प्रस्तुति के उपरान्त अपनी टिप्पणियाँ दीं। इस सत्र का संचालन डॉ. माधुरी रामधारी ने किया।

समापन समारोह

कार्यशाला पर प्रतिक्रिया करते हुए विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद् के सदस्य डॉ. उदय नारायण गंगू

तृतीय सत्र के उपरान्त समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशिका, आचार्य प्रतिष्ठा ने भाषा की उपयोगिता को रेखांकित करते हुए कहा कि ''***भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, ये संस्कृति के संरक्षण का माध्यम है।***'' प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने अपने संदेश में इस कार्यशाला को एक मशाल कहा, जिससे लोगों की सर्जना बढ़ेगी। इस अवसर पर मंचासीन अतिथियों के हाथों डॉ. हेमराज सुन्दर कृत 'हेमराज सुन्दर-व्यक्तित्व और कृतित्व' तथा कविता-संग्रह 'सच्ची खबर' का लोकार्पण किया गया। श्री धनराज शम्भु तथा नवोदित रचनाकार श्री विश्वानंद पतिया ने टिप्पणी देते हुए इस कार्यशाला को सार्थक बताया। श्री तेजेंद्र कुमार शर्मा ने अपने समापन-भाषण में नवोदित लेखकों को लिखने की प्रेरणा दी। समारोह में उपस्थित प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने धन्यवाद-ज्ञापन किया तथा उन्होंने संयुक्त रूप से डॉ. माधुरी रामधारी के साथ कार्यक्रम का संचालन किया।

स्वरचित नाटकों के अलग-अलग अंशों का अभिनय करते हुए मॉरीशसीय कलाकार

श्रीमती सीता रामयाद

श्री रीतेश मोहाबीर

सुश्री नंदिनी झुमक

श्री अशेष रामजियावन

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित त्रैमासिक कार्यक्रम
'विचार-मंच : 'युवकों द्वारा लघुकथा-लेखन''

5 अक्टूबर, 2017 को इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फ़ेनिक्स, मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा व वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय तथा भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में *'युवकों द्वारा लघुकथा लेखन'* विषय पर विचार-मंच का आयोजन किया गया। शिक्षा मंत्रालय के प्रतिनिधि के रूप में ज़ोन 1 के प्रशासक श्री निरंजन बिगन तथा मॉरीशस के प्रसिद्ध हिंदी लेखक श्री रामदेव धुरंधर ने कार्यक्रम में अपने वक्तव्य दिए।

सचिवालय के महासचिव, प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने उपस्थित सभी अतिथियों व हिंदी प्रेमियों का स्वागत करते हुए कहा कि सचिवालय को पुरानी और नई पीढ़ी के बीच सेतु बनाना ही इस आयोजन का उद्देश्य है। उन्होंने यह भी कहा कि ***"आप सबको एक जगह संगठित करने की ज़रूरत है और आज इस संगठन का दायित्व हम सब का है।"***

श्री निरंजन बिगन ने रचनाकारों को सृजनात्मक लेखन की ओर बढ़ने हेतु प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि ***"हमारी जितनी भी संस्थाएँ हैं या तो सम्मिलित रूप से या किसी भी तरीके से कुछ ऐसी गतिविधि अपनाएँ, जिससे युवकों के लिए उचित अवसर, उचित प्रोत्साहन और संसाधन प्रस्तुत हों और आनेवाले दिनों में वे सृजनात्मक लेखन की ओर बढ़ें।"***

प्रसिद्ध लेखक श्री रामदेव धुरंधर ने युवा रचनाकारों के मार्गदर्शन हेतु इस संयोजन की सराहना की तथा कहा कि ***"मॉरीशस की धरती पर लघुकथा-लेखन की तमाम संभावनाएँ हैं तथा लेखन की निरंतरता से ही लघुकथा को पल्लवित और पुष्पित किया जा सकता है।"***

भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव डॉ. (श्रीमती) नूतन पाण्डेय ने श्री रामदेव धुरंधर के साहित्य पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ***"उनके साहित्य में विविधता है।"*** उन्होंने लघुकथा-लेखन एवं गद्य क्षणिका में अंतर का उल्लेख भी किया तथा नवोदित लेखकों को लिखने की प्रेरणा दी।

समारोह के दौरान परिचर्चा-सत्र का आयोजन किया गया था, जिसमें उपस्थित महानुभावों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रो. विनोद कुमार मिश्र

श्री निरंजन बिगन

श्री रामदेव धुरंधर

डॉ. नूतन पाण्डेय

समारोह में 19 युवकों ने स्वरचित लघुकथाओं का पाठ किया। उनके चित्र, फ़ोटो एवं स्वरचित लघुकथाओं के शीर्षक इस प्रकार हैं –

सुश्री ज्ञानेश्वरी गुरझन
लघुकथा का विषय : 'काश वह मेरे साथ होता'

श्री विश्वानंद पतिया
लघुकथा का विषय : 'शब्द-शक्ति'

डॉ. तनूजा पदारथ-बिहारी
लघुकथा का विषय : 'सिफ़ारिश'

श्री घनश्याम शर्मा मोहाबीर (रितेश)
लघुकथा का विषय : 'ज़िंदगी में अगर रीवाइन्ड बटन होता, तो कितना अच्छा होता'

श्रीमती तीना जगु-मोहेश
लघु कथा का विषय : 'मनु की मनोव्यथा'

श्री दिनेश सुका
लघुकथा का विषय : 'गायत्री की अतिथि'

श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
लघु कथा का विषय : 'छोटा-सा लड़का'

श्री श्रवीण शर्मा बेनिदिन
लघुकथा का विषय : 'लाचारी'

सुश्री शिक्षा धनपत
लघुकथा का विषय : 'कुसंग से बचाव'

श्री सहलिल तोपासी
लघुकथा का विषय : 'दीवार'

सुश्री उर्वशी जोलिम
लघुकथा का विषय : 'हँसना और हँसाना'

श्री सोमदत्त काशीनाथ
लघुकथा का विषय : 'पापा नहीं आए'

श्रीमती करिश्मा रामझीतन-नारायण
लघुकथा का विषय : 'मेरा कर्तव्य'

श्री जिष्णु हरिशरण
लघुकथा का विषय : 'आसक्त'

सुश्री समानता अजूबा
लघुकथा का विषय : 'बीस रुपये का सिक्का'

श्री मानव बुधन
लघुकथा का विषय : 'यमदूत के लिए वेकेन्सी'

श्रीमती पार्वती पुन्या-जोसुरी
लघुकथा का विषय : 'तेज़ाब'

श्री राकेश श्रीकिसून
लघुकथा का विषय : 'आसान जीवन की खोज'

श्री वशिष्ठ कुमार झमन
लघुकथा का विषय : 'छुट्टी वाली सीख'

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

हिंदी दिवस 2017 : विश्व भर में

क्रोएशिया में हिंदी दिवस

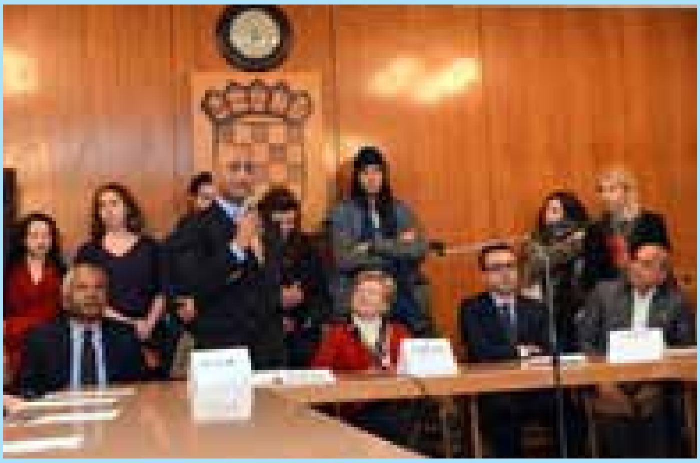

17 नवंबर, 2017 को ज़ाग्रेब विश्वविद्यालय के भारत विद्या विभाग में भारतीय दूतावास के सौजन्य से इंडोलॉजी विभाग द्वारा हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया गया। समारोह में हिंदी प्रो. रवींद्रनाथ मिश्र मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे, जिन्होंने संत तुकाराम की पंक्तियाँ सुनाकर शब्द की महत्ता को रेखांकित करते हुए हिंदी को भारतीय संस्कृति की आत्मा एवं राष्ट्र की अस्मिता से जोड़कर उसके महत्व को प्रतिपादित किया। समारोह में उपस्थित श्री संदीप कुमार ने हिंदी की वृद्धि एवं संस्कृत पीठ की स्थापना पर प्रकाश डाला तथा डॉ. इवान ने विभाग में संस्कृत और हिंदी के अध्ययन-अध्यापन की प्राचीन परंपरा का उल्लेख किया। साथ ही विभाग की छात्राओं ने हिंदी एवं क्रोएशियन में समूह

असम में हिंदी दिवस

8 अक्टूबर, 2017 को असम में पूव बरक्षेत्री राष्ट्रभाषा महाविद्यालय द्वारा हिंदी दिवस मनाया गया। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के पूर्वोतर मंत्री डॉ. सुशील चौधरी मुख्य अतिथि रहे। समारोह में पांडु कॉलिज के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. रफ़ीकुल हक, आदाबारी हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक मो. हसन अली व वरिष्ठ पत्रकार मो. मेसर अली विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। महाविद्यालय के सचिव शैयद अब्दुल रिकीब ने अपने वक्तव्य में कहा कि इस महाविद्यालय से पढ़कर आज कई छात्र हिंदी शिक्षक के रूप में काम कर रहे हैं। डॉ. चौधरी ने कहा कि वर्धा राष्ट्रभाषा का पूरे देश में ही नहीं, बल्कि विश्व में भी हिंदी का प्रचार-प्रसार करती रही है तथा उन्होंने हिंदी पढ़ने की महत्ता उजागर की। प्रो.

गीत प्रस्तुत किए तथा कविता-पाठ भी किया। इसके अतिरिक्त प्रो. रवींद्रनाथ मिश्र द्वारा निर्देशित नाटक 'भारतीय दूतावास' का मंचन किया गया। इस अवसर पर तृतीय एवं पंचम वर्ष के विद्यार्थियों द्वारा हिंदी में कविता-पाठ और कहानी-लेखन हुआ एवं चार्ट प्रदर्शिनी भी लगाई गई। समारोह में प्राध्यापकों समेत भारतीय दूतावास के अधिकारियों, छात्राओं तथा कई हिंदी प्रेमियों की उपस्थिति रही। समारोह का संचालन कुमारी वेलेंटीना एवं लावरा ने किया।

साभार : प्रो. रवींद्रनाथ मिश्र

हक ने बताया कि उन्होंने हिंदीतर भाषी होते हुए भी राष्ट्रभाषा को अपनाया, तो राष्ट्रभाषा ने भी उन्हें वो सब दिया, जो एक आमजन को नहीं मिलता। हसन अली एवं मेसर अली ने भी हिंदी के महत्व पर बात की। इस अवसर पर हिंदी प्रचारकों को सम्मानित किया गया तथा बच्चों को शब्दकोश दिए गए। महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। धन्यवाद-ज्ञापन महाविद्यालय के सचिव रिकीब ने किया।

प्रो. रफ़ीकुल हक की रिपोर्ट

रॉड्रिग्स हिंदी संगठन द्वारा हिंदी दिवस 2017

13 अक्टूबर, 2017 को फ़्लाँब्यायाँ होटल, पोर्ट माच्यूरें, रॉड्रिग्स में रॉड्रिग्स हिंदी संगठन द्वारा हिंदी दिवस मनाया गया। मार्गदर्शक मंत्री माननीय सर अनिरुद्ध जगन्नाथ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। महामहिम श्री अभय ठाकुर, भारतीय उच्चायुक्त, मॉरीशस विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। रॉड्रिग्स हिंदी संगठन के प्रधान श्री रमणीक चीतू ने स्वागत-भाषण देते हुए रॉड्रिग्स हिंदी संगठन की वर्तमान गतिविधियों और भावी योजनाओं पर बात की। सुश्री मीनाक्षी ओगुस्त ने मार्गदर्शक मंत्री और अतिथियों से हिंदी भाषा को प्राथमिक स्कूलों में लाने का आग्रह किया। भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अभय ठाकुर ने अपने वक्तव्य में कहा कि वे रॉड्रिग्स में हिंदी के विकास हेतु रॉड्रिग्स हिंदी स्पीकिंग यूनियन को सदैव अपना सहयोग देंगे। माननीय सर अनिरुद्ध जगन्नाथ ने रॉड्रिग्स हिंदी स्पीकिंग यूनियन के प्रधान को उनके प्रयासों के लिए बधाई दी और प्राथमिक स्तर पर पहली कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को प्रमाण-पत्र प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर महात्मा गांधी संस्थान के वरिष्ठ कलाकारों द्वारा संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समारोह में मुख्य आयुक्त, रॉड्रिग्स, श्री लुइ सेर्ज़ क्लैर, भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव, डॉ. नूतन पाण्डेय, महात्मा गांधी संस्थान और रवीन्द्रनाथ ठाकुर संस्थान परिषद् के अध्यक्ष, श्री जयनारायण मीतू, विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी, हिंदी प्रचारिणी सभा के कोषाध्यक्ष, श्री तहल रामदिन, श्री बिसुन मंग्रू तथा अन्य गण्यमान अतिथि उपस्थित थे। श्री रमणीक चीतू ने मंच-संचालन किया।

श्री रमणीक चीतू की रिपोर्ट

ला ट्रोब विश्वविद्यालय में हिंदी कार्यशाला

24 अक्टूबर, 2017 को मेल्बर्न विश्वविद्यालय के ऑस्ट्रेलिया इंडिया इंस्टिट्यूट और ला ट्रोब विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र में डॉ. दिनेश श्रीवास्तव ने 'विक्टोरिया में' और माला मेहता ने 'सिडनी और न्यू साउथ वेल्स में हिंदी के इतिहास और उसकी वर्तमान स्थिति' पर अपने विचार व्यक्त किए।

दूसरे सत्र में अदिति महेश्वरी ने हिंदी में अनुवाद के बारे में जानकारी दी। रेखा राजवंशी ने ऑस्ट्रेलिया में हिंदी साहित्य की रचना और प्रकाशनों पर बात की तथा ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों की भाषा से स्वयं हिंदी में अनुवादित कहानियों का उदाहरण प्रस्तुत किया।

तीसरे सत्र में हिंदी के भविष्य के बारे में विचार-विमर्श हुआ। इस सत्र के दौरान विक्टोरियाई संसद की शिक्षा-सचिव, जूडिथ ग्रे ने सरकार की भारत के विकास की नीति के बारे में बात की, जिसके अंतर्गत हिंदी के प्रसार तथा भारत से संबंध बढ़ाने के लिए सकारात्मक कार्यवाही का आश्वासन दिया। एस.बी.एस. रेडियो में हिंदी कार्यक्रम की अध्यक्षा, कुमुद मिरानी ने हिंदी मीडिया की स्थिति पर प्रकाश डाला।

चौथे सत्र में मेल्बर्न के प्रसिद्ध कवि डॉ. सुभाष शर्मा की अध्यक्षता में कवि-गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें सोनल शर्मा, रेखा राजवंशी, अरविन्द गैन्धर, कुमुद मिरानी, अदिति महेश्वरी आदि ने अपनी कविताएँ सुनाईं। अंत में, धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. इयन वूल्फ़ोर्ड ने किया।

हिंदी-पुष्प के फ़ेसबुक पृष्ठ से साभार

सम्मेलन, संगोष्ठी, अधिवेशन, समारोह

मॉरीशस में अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

5 नवंबर, 2017 को इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फ़ेनिक्स, मॉरीशस में 'हिंदी का वैश्विक स्वरूप' विषय पर अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। भारतीय उच्चायोग, विश्व हिंदी सचिवालय, इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, महात्मा गांधी संस्थान तथा आधारशिला फ़ाउंडेशन यू.के. इस सम्मेलन के आयोजक थे। सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि मॉरीशस के प्रधान मंत्री माननीय श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ तथा विशिष्ट अतिथि भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अभय ठाकुर रहे। माननीय श्री प्रवीण कुमार जगन्नाथ ने हिंदी तथा भोजपुरी के साथ अन्य सभी भारतीय भाषाओं की महानता पर प्रकाश डालते हुए, भारत और मॉरीशस के साहित्यकारों, संपादकों, पत्रकारों, सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं के पदाधिकारियों व सदस्यों, शिक्षकों तथा समस्त हिंदी प्रेमियों से भारतीय भाषाओं, संस्कृति व साहित्य को आगे बढ़ाने की माँग की। महामहिम श्री अभय ठाकुर ने भारत और मॉरीशस के अटूट संबंध तथा हिंदी भाषा की शालीनता को रेखांकित किया। इस अवसर पर मॉरीशसीय कवि डॉ. हेमराज सुन्दर तथा भारतीय कवयित्री श्रीमती सरोज व्यास द्वारा काव्य-पाठ हुआ। इसके अतिरिक्त महात्मा गांधी संस्थान के भोजपुरी विभाग द्वारा प्रकाशित 'भोजपुरी से साहित्य' और आधारशिला फ़ाउंडेशन के नवीनतम अंक का लोकार्पण संपन्न हुआ। साथ-साथ कैम्ब्रिज हायर स्कूल सर्टिफ़िकेट की परीक्षा में हिंदी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करनेवाली सुश्री निवेदिता रामी केरिया तथा विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। आधारशिला फ़ाउंडेशन की ओर से मॉरीशस के हिंदी साहित्यकारों को सम्मानित भी किया गया।

द्वितीय सत्र के अध्यक्ष मॉरीशस के व्यापार, उद्यम और सहकारिता मंत्री, माननीय श्री सुनील भोला ने अध्यक्षीय उद्बोधन दिया। मॉरीशस के भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव डॉ. नूतन पाण्डेय, विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र तथा आधारशिला फ़ाउंडेशन के निदेशक डॉ. दिवाकर भट्ट ने ***'हिंदी भाषा व साहित्य की भव्यता'*** पर अपने विचार व्यक्त किए। मॉरीशस से डॉ. शांति मोहाबीर, श्री धरमवीर गंगू, श्रीमती सौभाग्यवती धनुकचन्द तथा श्री राजेश कुमार उदय ने क्रमश: ***'मॉरीशस के गद्य-साहित्यकार-डॉ. उदय नारायण गंगू', 'भारत और मॉरीशस के सांस्कृतिक संबंधों में हिंदी का योगदान', 'अफ़्रीकी महाद्वीप में हिंदी' तथा 'मॉरीशस में हिंदी के पठन-पाठन में बैठकाओं की भूमिका'*** विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। भारत से डॉ. उषा शुक्ला, श्री बी.आर. टम्टा, डॉ. सुशील उपाध्याय तथा श्री शरण ने ***'हिंदी देश से दुनिया तक'*** विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। समारोह का संचालन डॉ. माधुरी रामधारी ने किया तथा डॉ. उदय नारायण गंगू ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

डॉ. शांति मोहाबीर की रिपोर्ट

मॉरीशस में हिंदी लेखक सम्मेलन

14 दिसंबर, 2017 को विश्व हिंदी सचिवलय, हिंदी लेखक संघ एवं हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी प्रचारिणी सभा के सभागार, लोंग माउंटेन में 'लेखक सम्मेलन' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. आनन्द वर्धन शर्मा तथा डॉ. उषा शर्मा रहे। हिंदी लेखक संघ के प्रधान डॉ. इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ ने 'हार्दिक स्वागत' कविता पढ़कर अतिथियों का स्वागत करते हुए संक्षेप में साहित्यिक गतिविधियों पर बात की। डॉ. आनन्द वर्धन शर्मा तथा डॉ. उषा शर्मा ने अपने संबोधन में भारत तथा मॉरीशस में हिंदी लेखन में अपनी संतुष्टि दिखाते हुए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी साहित्य के विकास पर चर्चा की। इस सम्मेलन में राष्ट्रसंघ में हिंदी को प्रायोगिक भाषा बनाने के मुद्दे का भी उल्लेख किया गया। संघ के प्रधान डॉ. लालदेव अंचराज़ ने लेखक संघ के कुछ वर्षों से हिंदी साहित्य सृजन में कार्यरत होने तथा 25 पुस्तकें प्रकाशित करने की चर्चा की और हिंदी को राष्ट्रसंघ की भाषा बनने की कामना व्यक्त की। हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री यन्तुदेव बुधु ने भारतीय और मॉरीशसीय लेखकों के इस मिलन पर अपनी प्रशंसा अभिव्यक्त की। विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने लेखक-लेखिकाओं के प्रति अपना आभार प्रकट करते हुए कहा कि वे अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी साहित्य को जीवन्त बनाने में अपना सहयोग दे रहे हैं। इस अवसर पर छात्रा देवयांशी उजोधा ने कविता-पाठ किया तथा श्री मोहनलाल जगेसर ने गीत-गायन किया। समारोह में विश्व हिंदी सचिवालय की उपमहासचिव डॉ. माधुरी रामधारी, श्री धनराज शम्भु तथा कई लेखक-लेखिकाएँ आदि उपस्थित थे।

डॉ. इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ की रिपोर्ट

मॉरीशस में बाल गीत महोत्सव

3 तथा 9 अक्टूबर, 2017 को महात्मा गांधी संस्थान, मोका तथा 12 अक्टूबर, 2017 को इलोत स्थित रवीन्द्रनाथ ठाकुर संस्थान में हिंदी संगठन तथा कला एवं संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान में बाल गीत महोत्सव का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय श्री पृथ्वीराजसिंह रूपन एवं विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र रहे। शिक्षा व मानव संसाधन मंत्रालय के अंतर्गत अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एज्यूकेशन ओथॉरिटी के सहयोग से पूर्व प्राथमिक पाठशालाओं से लगभग 1500 बच्चों ने कविता-पाठ तथा फ़िल्मी गीत-गायन में भाग लिया। मंच-संचालन एवं धन्यवाद-ज्ञापन श्रीमती अंजु घरभरन ने किया।

श्रीमती अंजु घरभरन की रिपोर्ट

मॉरीशस में विद्या दिवस समारोह

17 दिसंबर, 2017 को ऋषि दयानंद संस्थान, पाई में विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र की अध्यक्षता में 'विद्या दिवस समारोह' का आयोजन किया गया। भारत से आए स्वामी ओमकारानन्द अतिथि वक्ता रहे। उन्होंने अपने वक्तव्य में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला और सबको हिंदी पढ़ने की प्रेरणा दी। आर्य सभा के उपप्रधान श्री बालचन्द तानाकूर ने आज की पीढ़ी को हमारे पूर्वजों का पदानुसरण करने को कहा ताकि हिंदी फलती-फूलती रहे। ऋषि दयानंद संस्थान के प्रबंधक, डॉ. उदय नारायण गंगू ने हिंदी का उन्नयन कर रहे 'धर्म परिचय', 'धर्म रत्न' और 'हिंदी-पत्रिका' परीक्षाओं में उत्तीर्ण लगभग 300 परीक्षार्थियों को बधाई दी। अध्यक्ष प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने अपने वक्तव्य में हिंदी के साहित्य को समृद्ध बताया क्योंकि हिंदी विश्व भाषा के सिंहासन पर आसीन है, इसीलिए उसका ज्ञान होना नितान्त आवश्यक है। उन्होंने हिंदी पढ़नेवालों का भविष्य हिंदी-ज्ञान के कारण उज्ज्वल बताया। इस अवसर पर छात्रों ने लघु संदेश दिया एवं कविता-पाठ किया।

डॉ. उदय नारायण गंगू की रिपोर्ट

विश्व हिंदी न्यास का 17वाँ वार्षिक अधिवेशन

7 अक्टूबर, 2017 को फ्रीमाँट, कैलिफ़ोर्निया में विश्व हिंदी न्यास का 17वाँ वार्षिक अधिवेशन संपन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. सर्वज्ञ द्विवेदी रहे। समारोह में उपस्थित तथा कई देशों में प्राध्यापक रह चुके डॉ. सुरेश ऋतुपर्ण ने जापान, ट्रिनिडाड, मॉरीशस में हिंदी शिक्षण पर अपने अनुभवों के विषय में वार्ता दी। समारोह के दौरान कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए, जिनमें गायन और कथक नृत्य शामिल हैं। समारोह का संचालन श्री अभिनव शुक्ल ने किया।

निर्मला शुक्ल की रिपोर्ट

हिंदी का अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य' विषय पर वैश्विक हिंदी संगोष्ठी

5 सितंबर, 2017 को 'बैंक ऑव बड़ौदा' तथा 'वैश्विक हिंदी सम्मेलन' के तत्वावधान में बैंक ऑव बड़ौदा के बांद्रा कुर्ला संकुल स्थित मुख्यालय में '***हिंदी का अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य***' विषयक वैश्विक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। बैंक ऑव बड़ौदा के महाप्रबंधक श्री राधाकांत माथुर ने अतिथियों का स्वागत किया। दक्षिण अफ़्रीका 'हिंदी शिक्षा संघ' की अध्यक्षा प्रो. उषा शुक्ला मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत से भारतवंशियों द्वारा वहाँ 'हिंदी शिक्षा संघ' की स्थापना की गई है, जिसके द्वारा दक्षिण अफ़्रीका में 55 स्थानों पर हिंदी पढ़ाई जाती है। 'हिंदी शिक्षा संघ' ने रेडियो स्टेशन भी बनाया, जिसपर हिंदी सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के गीत एवं कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। मॉरीशस से पधारे वरिष्ठ साहित्यकार श्री राज हीरामन ने कहा कि हिंदी मॉरीशस के रग-रग में बसी है। दिल्ली से पधारे प्रवासी संसार के संपादक राकेश पांडेय ने विभिन्न देशों में हिंदी में हो रहे कार्य और वहाँ की स्थितियों की जानकारी देते हुए यह बताया कि अलग-अलग देशों में हिंदी का जो रूप प्रचलित है, हमें उसे उसी रूप में स्वीकार करना चाहिए, यह नहीं कि हम खड़ी बोली का स्वरूप उनपर थोपें। वैश्विक हिंदी सम्मेलन के निदेशक डॉ. एम.एल. गुप्ता 'आदित्य' ने कहा कि हिंदी के भविष्य को समझने से पहले वर्तमान प्रगति पर नज़र डालना आवश्यक है। उन्होंने हिंदी के समक्ष खड़ी विभिन्न चुनौतियों को प्रस्तुत किया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में वरिष्ठ साहित्यकार तथा भारतीय सांस्कृतिक परिषद् की प्रतिष्ठित पत्रिका 'गगनांचल' के संपादक डॉ. हरिश नवल ने विभिन्न देशों में हिंदी के प्रयोग के अपने अनुभवों को बांटते हुए कहा कि हमें बदलते समय के साथ बदलते समय की हिंदी को स्वीकार करना होगा। इस अवसर पर अन्य गण्यमान्य अतिथि एवं हिंदी प्रेमी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन बैंक ऑव बड़ौदा के उपमहाप्रबंधक तथा हिंदी सेवी जवाहर कर्णावट ने किया तथा आभार-ज्ञापन श्री पुनीत मिश्र ने किया।

डॉ. एम.एल. गुप्ता 'आदित्य' की रिपोर्ट

लंदन के भारतीय उच्चायोग में मुक्तिबोध की जन्म शताब्दी समारोह

13 नवंबर, 2017 को भारतीय उच्चायोग, लंदन में मुक्तिबोध की जन्म शताब्दी समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री ए.एस. राजन (मंत्री समन्वय) रहे, जिन्होंने युवा पीढ़ी को हिंदी साहित्य की ओर आकर्षित करने का संदेश दिया। इस अवसर पर कई साहित्यकारों ने काव्य-पाठ किया। समारोह में उपस्थित वरिष्ठ रेडियो पत्रकार एवं संपादक श्री कैलाश बुधवार ने कहा कि हमें मुक्तिबोध के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। डॉ. अचला शर्मा ने भी मुक्तिबोध के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अपना प्रपत्र प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन उच्चायोग के हिंदी व संस्कृति अधिकारी श्री तरुण कुमार ने किया।

श्री तरुण कुमार की रिपोर्ट

पेकिंग विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

27-28 अक्टूबर, 2017 को चीन के पेकिंग विश्वविद्यालय में दक्षिण एशिया अध्ययन विभाग द्वारा 'एशिया में हिंदी : ***पूर्वी एशियाई देशों के परिप्रेक्ष्य में भारत का अध्ययन***' विषय पर एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें चीन, जापान और कोरिया के विभिन्न विश्वविद्यालयों से हिंदी भाषा व साहित्य पढ़ानेवाले प्राध्यापकों और शोधार्थियों के अतिरिक्त 'भारत अध्ययन संस्थान' के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। संगोष्ठी के दौरान हिंदी भाषा के साथ-साथ भारत के समाज एवं साहित्य पर चिंतन तथा महाकाव्य, भाषा-विज्ञान और व्याकरण पर महत्वपूर्ण चर्चा की गई। संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों के दौरान दक्षिण कोरिया के हानकुक विश्वविद्यालय के प्रो. किम वू जू और प्रो. लिम गियुनतुंग, तोक्यो के दाईतो बनुका विश्वविद्यालय के प्रो. हिदेयाकी इशिदा ने उमराव सिंह जाटव के हिंदी दलित साहित्य पर अपना शोध-पत्र पढ़ा। जापान के ओसाका विश्वविद्यालय की प्रो. हिरोको कोबायाशी ने '***जापान में हिंदी के अध्यापन और अध्ययन***' पर अपना शोध-पत्र प्रस्तुत किया। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्रो. श्री अनिर्बान घोष ने '***चीन में हिंदी का अध्ययन तथा भारत-चीन द्विपक्षीय शैक्षणीक सहयोग का संभावित क्षेत्र***' पर अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर हिंदी के कई प्राध्यापक और बंगला, उर्दू, संस्कृत भाषा के विद्यार्थी उपस्थित थे।

श्री बी. एस. मिरगे की रिपोर्ट

40वाँ अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन 2017

2 और 3 नवंबर, 2017 को मिज़ोरम हिंदी प्रशिक्षण महाविद्यालय, आइज़ोल में नागरी लिपि परिषद् (पंजी), नई दिल्ली द्वारा केंद्रीय हिंदी निदेशालय के सौजन्य से 40वाँ अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन 2017 का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत बैंक ऑव बड़ौदा की हिंदी पत्रिका 'अक्षय्यम्' को नागरी पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार उपमहाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ. जवाहर कर्नावट एवं वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) डॉ. कियाम बेमबेम देवी ने प्राप्त किया। इस अवसर पर डॉ. जवाहर कर्नावट ने 'सूचना प्रौद्योगिकी एवं देवनागरी लिपि' विषय पर अपनी प्रस्तुति दी। इस सम्मेलन में देश के विभिन्न प्रांतों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

डॉ. जवाहर कर्नावट (राजभाषा) की रिपोर्ट

मैथिली एवं भोजपुरी लोक में कबीर' विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी

5-6 अक्टूबर, 2017 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के एफ़.टी.के. भवन, नई दिल्ली में कबीरदास और मैथिली-भोजपुरी संस्कृति के अन्त:संबंधों पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के उद्‌घाटन-सत्र में दिल्ली सरकार के उप मुख्य मंत्री माननीय श्री मनीष सिशोदिया मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने कबीर के ज्ञान और शिक्षा को स्वयं के जीवन में उतारने का प्रोत्साहन दिया तथा कहा कि कबीर का व्यक्तित्व हमें हर समय शक्ति प्रदान करता है। वरिष्ठ आलोचक प्रो. नित्यानंद तिवारी ने सत्र की अध्यक्षता की। स्वागत-वक्तव्य हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रो. हेमलता महीश्वर ने दिया तथा 'विषय प्रवर्तक हिंदी विभाग' जामिया में अध्यापक तथा साहित्यकार प्रो. चंद्रदेव रहे। श्री हरिसुमन बिष्ट ने सत्र का संचालन किया।

संगोष्ठी के दूसरे सत्र का विषय '***कबीर का लोक और लोक के कबीर***' रखा गया था। प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपना अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कबीर के लोक में मौजूद जातिगत पहचान, राजनैतिक और सामाजिक स्तर पर निचली जाति को हाशिए पर रखना और कबीरदास का उद्भव आदि पर अपनी बात रखी। प्रो. देवशंकर नवीन, डॉ. बजरंग बिहारी तिवारी और डॉ. संतोष पटेल ने भी वक्ता के रूप में अपने विचार व्यक्त किए।

तीसरे व अंतिम सत्र का विषय '***लोक में निर्गुण***' रहा, जिसका अध्यक्षीय भाषण प्रो. गोपेश्वर सिंह ने कबीर के निर्गुण और अन्य जगह मौजूद निर्गुण पर प्रकाश डाला। इस सत्र का संचालन प्रो. नीरज कुमार ने किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन कबीर-गायन का कार्यक्रम रखा गया।

साभार : यूनिवर्सिटी सर्कल.इन

साहित्य सेवी समिति की 28वीं मासिक साहित्यिक गोष्ठी

3 अक्टूबर, 2017 को वाई.आई.एम.एस. सभागृह, कोठी में साहित्य सेवी समिति की 28वीं मासिक साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र का विषय था '***मुस्लिम कवियों का हिंदी कविता को योगदान***'। सत्र की अध्यक्षता डॉ. एम. रंगय्या ने की। डॉ. दयाकृष्ण गोयल ने विषय की संक्षिप्त पूर्वपीठिका रखी। श्री निरज कुमार सिन्हा ने कहा कि अमीर खुसरो और ग़ालिब साहब इस विषय के ब्रांड भी थे और अंबासिडर भी। सत्र का संचालन करते हुए सुनिता लुल्ला ने कहा कि कई मुसलमान कवि हुए हैं, जिन्होंने हिंदी को समृद्ध किया है। डॉ. रंगय्या ने देवा प्रसाद माला द्वारा प्रस्तुत की गई सासेस की पुस्तिका का लोकार्पण किया। द्वितीय सत्र में काव्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. दयाकृष्ण गोयल ने की। श्री पूनम जोधपूरी, सीताराम माने, लक्ष्मीकांत जोशी, सुरेश जैन, सुषमा बैद तथा देवा प्रसाद माला ने काव्य-पाठ किया। सत्र का संचालन सुनिता लुल्ला ने किया।

साभार : इ-पेपर स्वतंत्रवार्ता.कॉम

त्रिसुगंधि राष्ट्रीय साहित्यकार संगोष्ठी

10-11 नवंबर, 2017 को नेहरू छात्रावास स्थित तिलक सभागार, उदयपुर में त्रिसुगंधि साहित्य कला एवं संस्कृति संस्थान के तत्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय साहित्यकार संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि भारतीय सेना के कर्नल श्री प्रवीण त्रिपाठी रहे तथा दिल्ली के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. मलिक राजकुमार अध्यक्ष के रूप में उपस्थित थे। साहित्यकार संगोष्ठी 5 सत्रों में संपन्न हुआ, जिसमें कला एवं लोक संस्कृति पर परिचर्चा, कहानी-सत्र, काव्य-गोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कला एवं लोक संस्कृति पर परिचर्चा में डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू की अध्यक्षता एवं अभिनेता तथा राजस्थानी नाट्य कलाकार श्री राजेश प्रभाकर मंड्लोई के मुख्य आतिथ्य में विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए। कथा-सत्र में कई साहित्यकारों ने कथा-वाचन किया। कार्यक्रम के दौरान नई दिल्ली के डॉ. मलिक राजकुमार को '***त्रिसुगंधि साहित्य शिरोमणि पुरस्कार***', उदयपुर के माधवी त्रिपाठी, बीकानेर के जहीन बीकानेरी, ग्वालियर के रमेश कटारिया पारस, दिल्ली के अनिल मीत एवं गोरखपुर के राजेश राज को '***त्रिसुगंधि साहित्य रत्न सम्मान***', दिल्ली के श्री नरेश शांडिल्य को '***त्रिसुगंधि कला रत्न पुरस्कार***', मुंबई के श्री राजेश मंडलोई एवं उदयपुर के डॉ. प्रेम भंडारी को '***त्रिसुगंधि गीत गुरु सम्मान***', चित्तौड़गढ़ के श्री रमेश शर्मा तथा श्री वरुण चतुर्वेदी को '***त्रिसुगंधि छंद गुरु सम्मान***', गहमर, उत्तर प्रदेश के श्री अखंड गहमरी, अनिल शर्मा, चिंतित पंचकुला, दिल्ली के ताराचंद शर्मा, नाथद्वारा के प्रमोद सनाढ्य, दिल्ली के शशिकांत, उदयपुर के रीना मनोरिया, रामेश्वर शर्मा, मीनू त्रिपाठी और योगेश्वर नारायण शर्मा को '***त्रिसुगंधी कविश्री सम्मान***' तथा उदयपुर के शारदा भट्ट को '***कृष्ण गांधी कलाश्री सम्मान***' से सम्मानित किया गया।

साभार : उदयपुर थिंकिंग.कॉम

लोकार्पण

दो पुस्तकों का लोकार्पण तथा सम्मान-समारोह

5 अक्टूबर, 2017 को उत्तर प्रदेश के हिंदी संस्थान यशपाल सभागार में राज्यपाल श्री राम नाईक ने वरिष्ठ आई.ए.एस. अधिकारी सुरेश कुमार सिंह की 'देवी काव्य परंपरा' तथा डॉ. जितेन्द्रकुमार सिंह 'संजय' की 'शब्दार्थ का साहित्य' पुस्तकों का लोकार्पण किया और साथ ही साहित्य, कला एवं संस्कृति के 6 समर्पित साधकों को 'शब्दार्थ गौरव सम्मान' से अलंकृत किया। श्री राम नाईक मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त ने की। श्री राम नाईक मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। प्रधान संयोजक डॉ. सरजीत सिंह डंग ने अपने स्वागत-भाषण में उत्तर प्रदेश के साहित्य, कला एवं संस्कृति से संबंधित आयामों की चर्चा करते हुए कहा कि प्रदेश को वैश्विक पहचान दिलाने में यहाँ के रचनाधर्मियों का विशिष्ट योगदान है। इस परंपरा को समृद्ध बनाने हेतु सम्यक प्रोत्साहन की आवश्यकता है। डॉ. जितेन्द्रकुमार सिंह 'संजय' ने कहा कि प्रभाश्री साहित्य महोत्सव का उद्देश्य श्रेष्ठ साहित्य के सृजन और संपादन के साथ ही कला और संस्कृति की लोक-हिताय परंपरा को आगे बढ़ाना है। मंच-संचालन एवं संयोजन डॉ. जितेन्द्रकुमार सिंह 'संजय' ने किया।

साभार : अवध की आवाज़.कॉम

दोहा मुक्तक संकलन 'तन दोहा मन मुक्तिका' का लोकार्पण

9 दिसंबर, 2017 को ग़ाज़िपुर के निराला सभागार में दोहा मुक्तक संकलन 'तन दोहा मन मुस्तिका' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता उ.प्र. हिंदी संस्थान में लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष, साहित्य मनीषी आचार्य सूर्यप्रसाद दीक्षित ने की। प्रख्यात हास्य कवि श्री सर्वेश अस्थाना और डॉ. उमाशंकर शुक्ल 'शितिकंठ' विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। आचार्य सूर्यप्रसाद दीक्षित ने कहा कि हिंदी साहित्य में निरंतर नई सृजन विधाओं को प्रोत्साहित करने और सहज सुग्राह्य एवं लोकोपयोगी लेखन को बढ़ावा देने की आवश्यकता है और उन्होंने हिंदी को समर्पित मुक्तक-लोक के इस नूतन अभियान को हिंदी साहित्य के लिए सुखद और उपयोगी बताया। उन्होंने हिंदी के उन्नयन के लिए एकजुट और समर्पित होने की प्रेरणा दी। 'दिल्ली कविता मंडल' के अध्यक्ष साहित्यकार प्रेम बिहारी मिश्र ने कहा कि मुक्तक-लोक के इस साहित्य समारोह में देश भर के अनेक साहित्यकार भाग ले रहे हैं, ऐसे आयोजन मुक्तक-लोक को देश के विभिन्न अंचलों में करना चाहिए। इस अवसर पर मुक्तक-लोक के रचनाकार और मध्य-प्रदेश से आये कवि श्री सुरेश तिवारी की काव्य-कृति 'भद्र काव्य-कुंज' का विमोचन किया गया। आचार्य सूर्यप्रसाद दीक्षित को उनके बहु आयामी साहित्यिक अवदान के प्रति हिंदी जगत् की कृतज्ञता व्यक्त करते हुए मुक्तक-लोक साहित्यांगन द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कई अन्य साहित्यकारों को हिंदी सेवा के लिए सम्मानित किया गया।

समारोह के द्वितीय सत्र में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान साहित्यकारों ने काव्य-पाठ किया। आभार-ज्ञापन प्रो. विश्वम्भर शुक्ल ने किया।

साभार : साहित्यकारों की दुनिया.कॉम

'21 प्रतिनिधि कहानियाँ' व 'श्री गुरु नानकदेव जी' पुस्तकों का लोकार्पण

26 नवंबर, 2017 को प्रीत साहित्य सदन, पंजी में श्री दलीप अवदग की पुस्तक 'श्री गुरु नानकदेव जी' व पंजाब के प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. तरसेम गुजराल की पुस्तक '21 प्रतिनिधि कहानियाँ' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. बलवेन्द्र सिंह ने की तथा डॉ. गुलज़ार सिंह पंधेर एवं श्री दलवीर लुधियानवी मुख्य अतिथि रहे। इसके साथ-साथ काव्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 30 रचनाकारों ने हिंदी, पंजाबी, उर्दू और फ़ारसी में अपने काव्य प्रस्तुत किए। श्रीमती प्रवीन गुप्त ने मंच-संचालन किया।

श्री मनोज प्रीत की रिपोर्ट

गीत-संग्रह 'बैरन भई बाँसुरी' का लोकार्पण एवं काव्य-गोष्ठी

10 दिसंबर, 2017 को गोविन्द कुटीर, हरथला, मुरादाबाद में श्री गोविन्द हिंदी सेवा समिति के तत्वावधान में श्री रामवीर सिंह 'वीर' के गीत-संग्रह 'बैरन भई बाँसुरी' का लोकार्पण एवं काव्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. राजीव सक्सेना रहे तथा डॉ. महेश दिवाकर और श्री अशोक विश्नोई विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अध्यक्षता श्री आर.सी. शुक्ल ने की। इस अवसर पर कई कवियों ने कविता-पाठ किया। समारोह का संचालन श्री अमरीश गर्ग ने किया।

साभार : साहित्य एमबीडी.ब्लॉगस्पॉट.इन

कवि नेहपाल सिंह वर्मा की पुस्तक 'गुड़िया देख रही है' भाग-4 का लोकार्पण

9 अक्टूबर, 2017 को नाचाराम स्थित श्री पातालेश्वर हनुमान मंदिर, हैदराबाद में कवि नेहपाल सिंह वर्मा की पुस्तक 'गुड़िया देख रही है' भाग-4 का लोकार्पण शिक्षाविद् श्रीमती कनोजिया द्वारा किया गया। प्रसिद्ध कवि एवं समीक्षक शशिनारायण 'स्वाधीन' ने नेहपाल सिंह वर्मा द्वारा हैदराबाद की सामाजिक एवं साहित्यिक सेवाओं का वर्णन करते हुए अपने लेख में कहा कि नेहपाल सिंह वर्मा ने हैदराबाद में कविता के द्वारा सामाजिक चेतना जागृत की। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. राजनारायण अवस्थी ने कहा कि उन्हें 'गुड़िया देख रही है' के चारों भागों को पढ़ने का अवसर मिला, जिसमें संयुक्त परिवार हैदराबाद राज्य और संयुक्त आंध्र प्रदेश में घटित घटनाओं का सजीव चित्रण है। धन्यवाद-ज्ञापन कवि संतोष कुमार मिश्र ने किया।

साभार : इ-पेपर स्वतंत्रवार्ता.कॉम

कवि श्री हरिश्चंद्र प्रसाद 'सौम्य' की काव्य-पुस्तक 'अंतर्प्रवाह' का लोकार्पण

11 अक्टूबर, 2017 को पटना में 'बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन' के तत्वावधान में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की जयंती के अवसर पर वरिष्ठ कवि श्री हरिश्चंद्र प्रसाद 'सौम्य' की काव्य-पुस्तक 'अंतर्प्रवाह' का लोकार्पण, न्यायमूर्ति श्री चंद्रमौली प्रसाद द्वारा किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश एवं प्रेस काउन्सिल ऑव इंडिया के चेयरमैन श्री चंद्रमौली कुमार प्रसाद रहे। पटना हाई कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश श्री राजेंद्र प्रसाद विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने की। श्री हरिश्चंद्र प्रसाद 'सौम्य' ने कहा कि 'अंतर्प्रवाह' मन के चिंतन व हृदय के भावों की गहराइयों का वह प्रवाह है, जो शब्दों के माध्यम से प्रस्फुटित होता है। डॉ. अनिल सुलभ ने बताया कि 'अंतप्रर्वाह' भारत की सभ्यता-संस्कृति एवं इसकी मज़बूत आध्यात्मिक जड़ों को रेखांकित करने का सार्थक प्रयास है। बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रधानमंत्री आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव एवं साहित्य मंत्री डॉ. शिववंश पांडेय ने भी अपने-अपने वक्तव्य दिए। कार्यक्रम का संचालन श्री योगेंद्र प्रसाद मिश्र ने किया।

साभार : बोलो ज़िन्दगी.ब्लॉगस्पॉट.कॉम

'काव्यांकुर-5' पुस्तक-लोकार्पण एवं काव्य-संध्या

1 अक्टूबर, 2017 को 'इंडिया हैबिटैट सेंटर' के गुलमोहर सभागार, नई दिल्ली में 'नवांकुर साहित्य सभा' द्वारा 17 नवांकुर कवियों द्वारा सृजित कविता-संग्रह 'काव्यांकुर-5' पुस्तक का लोकार्पण एवं काव्य-संध्या का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हिंदी के प्रख्यात साहित्यकार एवं ग़ज़लकार श्री बालस्वरूप राही एवं विशिष्ट अतिथियों में आकाशवाणी के भूतपूर्व उपमहानिर्देशक एवं कवि श्री लक्ष्मी शंकर वाजपेयी एवं देश के जाने-माने कवि एवं साहित्यकार उस्ताद मंगल नसीम एवं दोहाकार नरेश शांडिल्य और डॉ. दिविक रमेश रहे। 'काव्यांकुर-5' में 17 नवांकुर कवियों के नाम इस प्रकार हैं नंदा पाण्डेय, आरूही आनंद, डॉ. सुषमा गुप्ता, कुमारी अर्चना, प्रीतम कौर, कुमुद रंजन झा, विनोद कुमार विनोद, अभिषेक कुमार अम्बर, अपर्णा थपलियाल, अनिल 'मानव', कल्पना शुक्ला, कैलाश मंडलोई, संतोष अर्जुन कदम, ममता श्री सिंह, श्यामा अरोरा, असलम बेताब और स्वदेश चरौरा। सभी चयनित कवियों को आगंतुक साहित्यकारों द्वारा सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों ने नवांकुर कवियों को शुभकामनाएँ देते हुए अपनी रचनाएँ सुनाईं। इस अवसर पर कवि अनिल मीत एवं राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'टू मीडिया' के प्रमुख संपादक श्री ओमप्रकाश एवं विशेष संवाददाता वीरंदर सिंह उपस्थित थे। समारोह के दौरान सभी कवियों ने काव्य-पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन श्री नरेंदर सिंह निहार ने किया।

साभार : विजय दैनिक न्यूज़.कॉम

लोकार्पण समारोह तथा कवि-सम्मेलन

14 अक्टूबर, 2017 को पटना के आई.एम.ए. सभागार में श्री मधुरेश शरण की पुस्तक 'मन की हसरत' और श्री हरेन्द्र सिन्हा की पुस्तक 'जीवन-गीत' का लोकार्पण किया गया। वरिष्ठ कवि श्री सत्यनारायण मुख्य अतिथि रहे।कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि भगवती प्रसाद द्विवेदी ने की। श्री श्रीराम तिवारी, डॉ. किशोरी सिन्हा, श्री सतीश प्रसाद सिन्हा, श्री जितेन्द्र कुमार और श्री आसिफ़ रोहतासवी अतिथि के रूप में उपस्थित थे। आकाशवाणी के उपकेंद्र निदेशक किशोरी सिन्हा ने कहा कि वे दोनों कवियों की रचनात्मक प्रतिभा से काफ़ी प्रभावित होते रहे हैं। श्री सत्यनारायण ने उनकी पुस्तकों की पंक्तियों को उद्धृत कर उनकी विशेषताएँ बताईं और कहा कि उनमें संश्लिष्ट अर्थ व्यापक हैं ; यद्यपि पाठकों को ऊपर से यह सपाटबयानी लग सकती है। श्री भगवती प्रसाद द्विवेदी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भाषा के सहज सम्प्रेषण के बीच भी कविद्वय का अपने-अपने पारिवारिक और सामाजिक रिश्तों के प्रति जो लगाव परिलक्षित होता है, वह अनूठा है। उनका गद्य और पद्य पर समान अधिकार है। मंच-संचालन युवा साहित्यकार दिव्या रश्मि तथा धन्यवाद-ज्ञापन श्री नीलेश्वर मिश्रा ने किया।

साभार : बिहारी धमाका.ब्लॉगस्पॉट.कॉम

पुस्तक लोकार्पण समारोह

21 नवंबर, 2017 को कादम्बिनी क्लब हैदराबाद एवं ऑथर्स गिल्ड ऑव इंडिया हैदराबाद चैप्टर के संयुक्त तत्वावधान में 'तेलंगाना सारस्वत परिषद्' सभागार में पुस्तक लोकार्पण का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रो. ऋषभदेव शर्मा ने की। प्रथम सत्र के दौरान डॉ. विनयकुमार शुक्ल द्वारा संपादित समीक्षा कृति '***डॉ. अहिल्या मिश्र : कृतियों से गुज़रते हुए***' एवं डॉ. रामनिवास साहू की कृतियों '***मुझे कुछ कहना है***', '***बड़का दाई***' और 'भाषा सर्वेक्षण' का लोकार्पण मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित प्रो. शुभदा वाजपे तथा प्रिया चौधरी के हाथों संपन्न हुआ। प्रो. शुभदा वाजपे ने अपने वक्तव्य में संपादित पुस्तक एवं डॉ. साहू की पुस्तकों पर अपने विचार व्यक्त किए। द्वितीय सत्र में श्री हरिओम 'तरंग' की अध्यक्षता में कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें उपस्थित महानुभावों ने काव्य-पाठ किया। समारोह का संचालन मीना मुथा ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन डॉ. गीता जांगिड़ ने किया।

साभार : इ-पेपर स्वतंत्रवार्ता.कॉम

साहित्यकारों का सम्मान, पुस्तक-लोकार्पण एवं विराट कवि-सम्मेलन

12 नवंबर, 2017 को झड़ीपानी स्थित ओक ग्रोव स्कूल के डॉ. डी.के.झा प्रेक्षागार, उत्तराखण्ड में कायाकल्प साहित्य कला फ़ाउण्डेशन, नोएडा द्वारा साहित्यकारों का सम्मान, पुस्तक-लोकार्पण एवं विराट कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। समारोह के प्रथम सत्र में सुकवि श्री जयप्रकाश पाण्डेय द्वारा रचित काव्य कृति '***दरिया के दो पाट***' का लोकार्पण संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित साहित्यकार श्री लक्ष्मी शंकर बाजपेयी, अध्यक्ष पं. सुरेश नीरव एवं कायाकल्प साहित्य फ़ाउण्डेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं गीतकार डॉ. अशोक मधुप, श्री असीम शुक्ल, डॉ. राम विनय सिंह तथा राधा कान्त पाण्डेय ने पुस्तक पर अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र का संचालन डॉ. अरुण सागर ने किया।

द्वितीय सत्र में सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें फ़ाउण्डेशन द्वारा चयनित कवियों तथा साहित्यकारों को उनके साहित्यिक प्रदेय हेतु सम्मानित किया गया। डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र एवं असीम शुक्ल को 'कायाकल्प साहित्य शिरोमणि सम्मान 2017', डॉ. राम विनय सिंह, अम्बर खरबन्दा एवं भारत में हिंदी चेतना की प्रतिनिधि डॉ. कविता भट्ट श्रीनगर (गढ़वाल, उत्तराखण्ड) को साहित्य लेखन हेतु 'कायाकल्प साहित्य भूषण सम्मान 2017', जयप्रकाश पाण्डेय तथा राकेश जुगराण और जसवीर सिंह 'हलधर' को 'कायाकल्प साहित्यश्री सम्मान 2017' से विभूषित किया गया। साथ-साथ श्री जे.पी. पाण्डेय एवं श्री अशोक मधुप को भी सम्मानित किया गया।

समारोह के तृतीय सत्र के दौरान कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें कई कवियों व विद्यार्थियों ने कविता-पाठ किया। कार्यक्रम में लगभग 40 से अधिक कवियों, कवयित्रियों एवं शायरों की उपस्थिति रही।

साभार : हिंदी चेतना.कॉम

श्री भोलानाथ मधुकर की पुस्तक 'मौन साधक' का लोकार्पण

15 अक्टूबर, 2017 को अनुमंडल व्यवहार न्यायालय परिसर स्थित सभागार में साहित्यकार भोलानाथ मधुकर रचित पुस्तक 'मौन साधक' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व प्राचार्य टीपी चौबे ने की। ज़िला एवं सत्र न्यायाधीश बेगूसराय के गंगोत्री राम त्रिपाठी एवं समस्तीपुर के सुबोध कुमार श्रीवास्तव ने पुस्तक का विमोचन किया। 'मौन साधक' पुस्तक पूर्व ज़िला एवं सत्र न्यायाधीश और समाजसेवी नागेन्द्रनाथ चौधरी के जीवन पर आधारित है। बी.सी.आई. के पूर्व चेयरमैन सूरज नारायण प्रसाद सिन्हा, अवर न्यायाधीश रंजूला भारती, पटना कॉलिज के पूर्व प्राचार्य डॉ. नवल किशोर चौधरी, पूर्व मंत्री एवं विधायक आलोक कुमार मेहता, ए.एस. पी. संतोष कुमार, पूर्व विधायक दुर्गा प्रसाद सिंह, अनुमंडलीय अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष नवल किशोर सिंह, प्रो. उमेश चंद्र सिंह, कवि गगन देव चौधरी, प्रो. पी.के. झा प्रेम एवं धीरेंद्र कुमार सिंह ने पुस्तक के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर उप मुख्य पार्षद चंदन प्रसाद, जदयू नेता डॉ. अरविंद कुमार ज्योति, श्रीराम पोद्दार, प्रभात कृष्ण, अजय कुमार, चंदन कुमार जायसवाल, एसके प्रसाद, रमाकांत प्रसाद, मो. सुलेमान सहित कई साहित्य प्रेमी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अरुण कुमार चौधरी ने किया तथा धन्यवाद-ज्ञापन भोलानाथ मधुकर के किया।

साभार : दलसिंह सराइ लाइव का फ़ेसबुक पृष्ठ

श्री देवेंद्र देव की पुस्तक 'आवाज़ दे रहा महाकाल' का लोकार्पण

6 अक्टूबर, 2017 को आनन्दधाम यज्ञशाला, दिल्ली में विश्व जागृति मिशन के तत्वावधान में श्री देवेंद्र देव की पुस्तक 'आवाज़ दे रहा महाकाल' का लोकार्पण संपन्न हुआ। आचार्य सुधांशु ने श्री देवेंद्र देव की पुस्तक को संकल्प, विश्वास, शक्ति, साधना एवं प्रेम की कृति बताया, जिसमें देश के लोगों को कर्तव्य-पथ पर चलने की प्रेरणा मिलेगी। कवि श्री मदन मोहन वर्मा कान्त ने पुस्तक को मानवीयता, एकता और समरसता का विलक्षण संदेश देनेवाली पुस्तक कहा। युवा कवि श्री शम्भु

ठाकुर ने कहा कि उनके गीत देश एवं समाज की बहुआयामी समस्याओं से परिचित कराते हैं। डॉ. अवनीश सिंह चौहान ने कहा कि 'आवाज़ दे रहा महाकाल' के गीत सकारात्मक ऊर्जा से ओतप्रोत हैं। समारोह में कई कवियों की उपस्थिति रही। संचालन श्री राम महेश मिश्र ने किया।

अम्स्टेल गंगा.ऑर्ग पत्रिका अंक अक्टूबर-दिसंबर 2017 से साभार

श्रीमती ममता मेहरोत्रा की पुस्तक 'मेरी प्रिय कहानियाँ' का लोकार्पण

6 अक्टूबर, 2017 को पटना के स्थानीय अभिलेख भवन में 'सामयिक परिवेश' द्वारा ममता मेहरोत्रा की पुस्तक 'मेरी प्रिय कहानियाँ' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम में दूरदर्शन की उप निदेशक रत्ना पुरकायस्थ, शायर क़ासिम खुर्शीद, ममता मेहरोत्रा, संजय कुमार कुंदन, ओ.पी. शाह आदि अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर संस्था से जुड़े 50 लोगों को विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान हेतु सम्मानित किया गया, जिसमें डॉ. नीतू नवगीत, विभा सिंह, मनोज बच्चन, संजय शुक्ला, पूनम आनंद, विभा रानी श्रीवास्तव, वसुंधरा पांडेय, मुकेश हिसारिया, सागरिका चौधरी आदि प्रमुख हैं। इस अवसर पर डॉ. नीतू नवगीत द्वारा गीत और भजन प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन सामयिक परिवेश के संपादक समीर परिमल एवं रामनाथ शोधार्थी ने किया।

साभार : आदर्शन समाचार.कॉम

उपन्यासकार मनु की पुस्तक 'वादों की परछाइयाँ' का लोकार्पण

26 नवंबर, 2017 को सुभाष रोड स्थित, देहरादून में उपन्यासकार मनु की पुस्तक 'वादों की परछाइयाँ' का लोकार्पण संपन्न हुआ। समारोह में सविता कपूर, जितेन ठाकुर, सावित्री काला, कृष्णा खुराना और अंबर खरबंदा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कैंट विधायक एवं विधानसभा अध्यक्ष हरबंस कपूर ने पुस्तक लेखन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह कार्य समाज को दिशा देना और जागरूक करना है।

साभार : जागरण.कॉम

सम्मान

ब्रिटिश हिंदी लेखक श्री तेजेंद्र शर्मा को 'मेम्बर ऑव द ऑर्डर ऑव ब्रिटिश एम्पायर' सम्मान

7 दिसंबर, 2017 को बकिंघम पैलेस, लंदन में हिंदी लेखन, हिंदी साहित्य की सेवा और सामुदायिक एकजुटता की गतिविधियों के लिए ब्रिटेन के प्रिंस चार्ल्स के हाथों श्री तेजेंद्र शर्मा को 'मेम्बर ऑव द ऑर्डर ऑव ब्रिटिश एम्पायर' सम्मान से अलंकृत किया गया। उन्होंने कहा कि ***"ब्रिटेन की महारानी द्वारा किसी हिंदी लेखक को उसके साहित्यिक अवदान के लिए सम्मानित किया जाना एक ऐतिहासिक घटना है। इससे हिंदी को वैश्विक भाषा बनने में बल मिलेगा।"***

श्री तेजेंद्र शर्मा की रिपोर्ट

राष्ट्रीय बाल साहित्य सम्मान समारोह 2016-2017

26 नवंबर, 2017 को ऋतुराज वाटिका, चितौड़गढ़, राजस्थान में राजकुमार जैन राजन फ़ाउंडेशन, आकोला, ***राजस्थान और साहित्य समीर दस्तक मासिक पत्रिका के सदस्यों द्वारा राष्ट्रीय बाल साहित्य सम्मान समारोह*** 2016-2017 का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री विकास दवे रहे तथा साहित्यकार श्री गोविन्द शर्मा विशिष्ट अतिथि रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सांसद सी.पी. जोशी ने की, जिन्होंने बच्चों को पुस्तक संस्कृति से जोड़ने की बात कही। श्री विकास दवे ने कहा कि साहित्य सृजकों ने सत्ता आधारित साहित्य सृजन को कर्म बना दिया है, जबकि श्री गोविन्द शर्मा ने कहा कि हमें समय के साथ बाल साहित्य के नए शिल्प के संदर्भों में सृजन करना चाहिए। कार्यक्रम संयोजन श्री राजकुमार जैन 'राजन' ने अपने उद्बोधन में यह विचार प्रकट किया कि बाल साहित्यकार 'देवदूत' अपने सृजन के माध्यम से बालकों में हिंदी भाषा के प्रति अनुराग बढ़ाने के साथ ही उन्हें संस्कारों से पल्लवित करते हैं। लेखक डॉ. कनक जैन के अनुसार रचनाकार ही बच्चों के निकट पहुँचकर उनका चारित्रिक विकास कर सकते हैं। इस अवसर पर बाल साहित्य सृजन, उन्नयन व बाल-कल्याण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करनेवाले शब्द-शिल्पियों को सम्मानित किया गया। सुलम्बर की डॉ. विमला भण्डारी एवं अल्मोड़ा के श्री उदय किरोला को '***डॉ. राष्ट्रबन्धु स्मृति सम्मान***', शाहजहाँपुर के डॉ. नागेश पाण्डेय 'संजय' एवं राजस्थान के श्री चंद्र सिंह बिरकाली को '***श्रीप्रसाद स्मृति बाल साहित्य सम्मान***', जयपुर की सावित्री चौधरी को '***बाल साहित्य सम्मान***' से विभूषित किया गया। इसी तरह रतनगढ़ के श्री ओमप्रकाश क्षत्रिय एवं पौढ़ी गढ़वाल के मनोहर चमोली 'मनु' को '***डॉ. बालशौरी रेड्डी बाल साहित्य सम्मान***', जोधपुर के डॉ. डी.डी. ओझा एवं गांधीनगर के गुलाबचंद पटेल को '***अम्बालाल हींगड स्मृति सम्मान***', भोपाल के श्री घनश्याम मैथिल 'अमृत' एवं रायपुर के सत्यनारायण सत्य को '***इंद्रादेवी हींगड स्मृति सम्मान***', गुड़गांव के श्री हरीश कुमार अमित एवं बरेली के अरविन्द कुमार साहु को '***जगदीश दुग्गड स्मृति बाल साहित्य सम्मान***' से, झालावाड के श्री शिवचरण सेन 'शिवा' एवं सोज के श्री अब्दुल राही को '***फ़तेहलाल चणडालिया स्मृति बाल साहित्य सम्मान***' दिया गया तथा अन्य कई साहित्यकारों को भी सम्मानित किया गया। इस अवसर पर साझा संकलन 'शब्दों का इन्द्रधनुष' का लोकार्पण एवं आयोजित अखिल भारतीय राष्ट्र समर्पण बाल कहानी प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

साभार : हिंदी टीचर्स सतारा.ब्लॉगस्पॉट.कॉम

साहित्यकार सम्मान एवं विराट कवि-सम्मेलन 2017

11 नवंबर, 2017 को नोहर के श्रीराम वाटिका में शारदा संस्थान के तत्वावधान में श्री हनुमान प्रसाद दीक्षित की स्मृति में साहित्यकार सम्मान एवं विराट कवि-सम्मेलन 2017 का आयोजन किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. इन्दुशेखर 'तत्पुरुष' रहे। इस अवसर पर साहित्यकार मधु आचार्य 'आशावादी' को 'हनुमान प्रसाद दीक्षित साहित्यकार सम्मान' दिया गया। साथ-साथ शारदा साहित्य संस्थान के सहयोग से प्रकाशित श्रीगंगानगर के साहित्यकार डॉ. कृष्ण कुमार 'आशु' की व्यंग्य रचना पुस्तक 'स्कैंडल मार्च' का लोकार्पण किया गया। इसके पश्चात् कवि-सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें सुमित्रा सरल, युवा कवि राजकुमार राज, राजस्थानी वयोवृद्ध गीतकार भागीरथ सिंह भाग्य, कवि अशोक सेवदा व श्रवणदान शून्य ने काव्य-पाठ किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष मेहरूनिशा टाक ने साहित्य को समाज का दर्पण बताया। विधायक अभिषेक मटोरिया ने सभी साहित्य प्रेमियों व कवियों को हनुमान प्रसाद दीक्षित के साहित्य कर्म से सीखने की आवश्यकता जताई। पंचायत समिति प्रधान अमरसिंह पूनियां, पंचायत के पूर्व प्रधान उर्मिला बिजारणियां, संयुक्त व्यापार संघ के अध्यक्ष व भामाशाह संतलाल मोदी, अश्विनी शर्मा, हरीश बी. शर्मा ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किए। मंच-संचालन श्री महेन्द्रप्रताप शर्मा ने किया तथा श्री राजेश दीक्षित व राकेश दीक्षित ने आभार-व्यक्त किया।

साभार : इ पत्रिका.कॉम

पाँच हिंदी सेवियों का सम्मान

4 अक्टूबर, 2017 को खुशीराम सभागार, देहरादून में महात्मा खुशीराम सार्वजनिक पुस्तकालय एवं वाचनालय के 96वें स्थापना दिवस के अवसर पर पुस्तकालय समिति ने हिंदी भाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए पाँच हिंदी सेवियों को सम्मानित किया। समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि हिंदी सेवी विधायक श्री खजान दास ने किया। साहित्यकार श्री ज्ञानेन्द्र कुमार, वरिष्ठ पत्रकार डॉ. प्रकाश थपलियाल, पर्यावरणविद् श्री जगदीश कुमार, कवयित्री श्रीमती डाली डबराल एवं श्री एस.के. पाठक को इस अवसर पर सम्मानित किया गया। समारोह के दौरान छात्र-छात्राओं ने विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का आयोजन किया। कार्यक्रम में कई गण्यमान्य नागरिक उपस्थित थे। समारोह का संचालन श्रीमती वीना बैंजवाल ने किया।

श्री ज्ञानेन्द्र कुमार की रिपोर्ट

19वाँ अलंकरण समारोह

10 दिसंबर, 2017 को औरैया के चौधरी विशम्भर सिंह भारतीय इण्टर कॉलिज में औरैया हिंदी प्रोत्साहन निधि का 19वाँ अलंकरण समारोह संपन्न हुआ, जिसमें अनेक क्षेत्रों में हिंदी को आगे ले जानेवाले कवियों, रचनाकारों व साहित्यकारों को विभिन्न काव्य सम्मानों से सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि लोक सेवा आयोग के पूर्व सदस्य श्री चन्द्रमणि सिंह रहे। इस अवसर पर लखनऊ के साहित्यकार प्रो. पवन अग्रवाल को 'औरैया हिंदी प्रोत्साहन निधि सम्मान' तथा श्री योगेन्द्र प्रताप सिंह चतुर्वेदी को 'साहित्य शिखर पुरुष सम्मान' से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में शहर के साहित्यकार व गण्यमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

साभार : औरैया न्यूज़.कॉम

जयपुर में गोइन्का पुरस्कार व सम्मान-समारोह

8 अक्टूबर, 2017 को जयपुर में कमला गोइन्का फ़ाउण्डेशन द्वारा साहित्य पुरस्कार व सम्मान-समारोह का आयोजन किया गया। राजस्थान सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री, श्री अरुण चतुर्वेदी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। प्रयास संस्थान के अध्यक्ष श्री दुलाराम सहारण ने अतिथियों का स्वागत किया। समारोह में राजस्थानी साहित्यकार प्रो. जहूर खाँ मेहर को '***गोइन्का राजस्थानी साहित्य सारस्वत सम्मान***', डॉ. चेतन स्वामी को '***मातुश्री कमला गोइन्का राजस्थानी साहित्य पुरस्कार***', श्रीमती ज़ेवा रशीद को '***रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत महिला साहित्यकार पुरस्कार***', श्रीमती शीतल दूगड़ को '***राजस्थान अनमोल रत्न सम्मान***', वरिष्ठ पत्रकार श्री श्याम महर्षि को '***रावत सारस्वत पत्रकारिता सम्मान***' से सम्मानित किया गया। श्री अरुण चतुर्वेदी ने अपने वक्तव्य में पुरस्कृत व सम्मानित साहित्यकारों को बधाई देते हुए आयोजक श्री श्यामसुन्दर गोइन्का व उनकी संस्था कमला गोइन्का फ़ाउण्डेशन की प्रशंसा करते हुए कहा कि फ़ाउण्डेशन राजस्थानी साहित्य के प्रति समर्पित हैं और उसके द्वारा किए जा रहे प्रयास सराहनीय हैं।

श्री कैलाश जाटवाला की रिपोर्ट

राजभाषा हिंदी का वार्षिक पुरस्कार-वितरण-समारोह

27 दिसंबर, 2017 को भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में राजभाषा हिंदी का वार्षिक पुरस्कार-वितरण-समारोह का आयोजन किया गया। प्रो. चन्द्रकला पाडिया मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। हिंदी पखवाड़े के दौरान राजभाषा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था, जिनमें 'शब्द-ज्ञान व अनुवाद' निबंध, सुलेख एवं श्रुतलेख, कविता-पाठ, वाद-विवाद आदि प्रमुख थीं। प्रो. पाडिया ने वहाँ उपस्थित सभी लोगों को अपने काम में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने की अपील की। साथ-साथ उन्होंने प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को पुरस्कृत भी किया। श्री राजेश कुमार ने मंच-संचालन किया तथा श्री प्रेमचंद ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

श्री राजेश कुमार की रिपोर्ट

साहित्यकार प्रो. शाही का सम्मान

17 नवंबर, 2017 को शिकोहाबाद में 'शब्दम्' संस्था ने अपने स्थापना दिवस के अवसर पर भोजपुरी एवं हिंदी के प्रख्यात कवि एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो. सदानंद शाही को भोजपुरी एवं हिंदी के क्षेत्र में किए गए महत्वपूर्ण योगदान हेतु सम्मानित किया। प्रो. शाही ने अपने वक्तव्य में कहा कि भोजपुरी अब भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी है तथा हिंदी भाषा अवधी, ब्रज, भोजपुरी, बुन्देली सहित कई बोलियों को स्वयं में समाहित कर विकसित हुई है। संस्था के वरिष्ठ सदस्य श्री शेखर बजाज ने कहा कि भाषा संस्कृति का अभिन्न अंग है, इसलिए हिंदी भाषा के प्रसार के लिए उसे लचीला तथा सुगम होना चाहिए। समारोह में पूर्व सांसद उदय प्रताप सिंह, मदन कश्यप, राजेश मल्ल एवं डॉ. अजय कुमार आहुजा आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. महेश आलोक ने किया।

दीपा वर्मा की रिपोर्ट

श्री कृष्ण कुमार यादव को 'सृजन साहित्य सम्मान'

10 दिसंबर, 2017 को राजस्थान के श्रीगंगानगर में स्थित सृजन सेवा संस्थान ने साहित्य के क्षेत्र में योगदान हेतु ब्लॉगर एवं साहित्यकार श्री कृष्ण कुमार यादव को 'सृजन साहित्य सम्मान' से सम्मानित किया। बी.एस.एफ़., जोधपुर के डेप्यूटी कमांडेंट और दोहाकार श्री विजेंद्र शर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री कश्मीरी लाल जसूजा ने किया और कहा कि कविता आदमी को सही दिशा की ओर अग्रसर कराती है। समारोह में कई साहित्य प्रेमी उपस्थित थे।

साभार : साहित्यकारों की दुनिया.कॉम

श्री नीरज दइया को 'मावलीप्रसाद श्रीवास्तव सम्मान 2017'

11 अक्टूबर, 2017 को उदयपुर राजस्थान में सृजनगाथा डॉट कॉम द्वारा 14वें अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन के उपलक्ष्य में निबंधकार, कवि एवं समीक्षक श्री नीरज दइया को उनकी पुस्तक 'बुलाकी शर्मा के सृजन-सरोकार' हेतु '***मावलीप्रसाद श्रीवास्तव सम्मान 2017***' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान बाबू मावलीप्रसाद श्रीवास्तव साहित्यपीठ, रायपुर द्वारा प्रतिवर्ष निबंध विधा पर उल्लेखनीय कार्य के लिए प्रदान किया जाता है।

साभार : नेगचर.वर्डप्रेस.कॉम

श्रीमती आकांक्षा यादव को 'मानसश्री सम्मान-2017'

13 दिसंबर, 2017 को हिंदी साहित्य और लेखन के क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए युवा साहित्यकार व ब्लॉगर श्रीमती आकांक्षा यादव को मौन तीर्थ सेवार्थ फ़ाउंडेशन, उज्जैन द्वारा '***मानसश्री सम्मान-2017***' से अलंकृत किया गया। आप भारत के अलावा जर्मनी, श्रीलंका और नेपाल आदि देशों में भी सम्मानित हो चुकी हैं।

साभार : साहित्यकारों की दुनिया.कॉम

श्रद्धांजलि

कवि श्री कुंवर नारायण

15 नवंबर, 2017 को कवि श्री कुंवर नारायण का 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 17 सितंबर, 1927 को फ़ैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था। आपने 1951 में लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य में एम.ए किया। 1973 से 1979 तक आप 'संगीत नाटक अकादमी' के उप-पीठाध्यक्ष रहे। 1975 से 1978 तक आपने अज्ञेय द्वारा संपादित मासिक पत्रिका में संपादक मंडल के सदस्य के रूप में कार्य किया। आप 'युगचेतना', 'नया प्रतीक' तथा 'छायानट' के संपादक मंडल के भी सदस्य रहे। 2009 में आपको 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। 6 अक्टूबर 2009 को राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल द्वारा आपको सबसे बड़े साहित्यिक सम्मान 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया गया। इसके अतिरिक्त आपको 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', 'व्यास सम्मान', केरल का 'कुमार आशान पुरस्कार', 'प्रेमचंद पुरस्कार', 'तुलसी पुरस्कार', 'उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार', 'राष्ट्रीय कबीर सम्मान', 'शलाका सम्मान', 'मेडल ऑव वॉरसा यूनिवर्सिटी' तथा पोलैंड और रोम के 'अंतरराष्ट्रीय प्रीमियो फ़ेरेनिया सम्मान' से विभूषित किया गया।

1956 में 'चक्रव्यूह', 1959 में 'तीसरा सप्तक', 1961 में 'हम-तुम', 1979 में 'अपने सामने', 1993 में 'कोई दूसरा नहीं', 2002 में 'इन दिनों' जैसे कविता-संग्रह, 1965 में 'आत्मजयी', 2008 में 'वाजश्रवा के बहाने' जैसे खंड काव्य, 1973 में 'आकारों के आसपास' जैसे कहानी-संग्रह, 1998 में 'आज और आज से पहले', 1999 में 'मेरे साक्षात्कार', 2003 में 'साहित्य के कुछ अन्तर्विषयक संदर्भ' जैसे समीक्षा विचार, 2002 में 'कुंवर नारायण-संसार', 2002 में 'कुंवर नारायण उपस्थिति', 2007 में 'कुंवर नारायण चुनी हुई कविताएँ', 2008 में 'कुंवर नारायण-प्रतिनिधि कविताएँ' आदि आपकी प्रमुख कृतियों में शामिल हैं। फ़िल्म समीक्षा तथा अन्य कलाओं पर भी आपके लेख नियमित रूप से पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहे हैं।

साभार : भारत डिस्कोवरी.ऑर्ग

श्री राधेश्याम तिवारी

1 अक्टूबर, 2017 को वरिष्ठ लेखक, पत्रकार, रंगकर्मी एवं कला समीक्षक श्री राधेश्याम तिवारी का 73 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 25 जुलाई, 1944 को बिहार में हुआ था। आप कई अखबारों तथा पत्रिकाओं में संपादकीय सलाहकार तथा राजस्थान क्रिकेट बोर्ड के मैनेजर भी रहे। आप लंबे समय तक दिल्ली और मुंबई में अखबार, टी.वी. और फ़िल्मों के लिए लिखते रहे। आपने रंगकर्म से पटना और बिहार को रंगमंच की आधुनिकता से परिचित करवाया। आपने सन् 1970 में 'अरंग' नामक संस्था बनाई और 'तीन अपाहिज', 'कूड़े का पीपा' तथा 'वह एक कुरूप ईश्वर' जैसे नाटकों का भी मंचन किया तथा फ़िल्मों में भी अभिनय किया। आपके लिखे नाटक का कई बार मंचन भी हुआ। आपकी रचनाओं में 'अफ़ीम के फूल', 'आदरणीय डैडी और अपने बच्चे में' जैसे नाटक शामिल हैं।

साभार : मीडिया चक्र.कॉम

प्रधान संपादक : प्रो. विनोद कुमार मिश्र
संपादक : डॉ. माधुरी रामधारी
सहायक संपादक : श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
संपादकीय टीम : श्रीमती त्रिशिला आपेगाडु, सुश्री जयश्री सिबालक, श्रीमती विजया सरजु
पता : विश्व हिंदी सचिवालय, स्विफ़्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड 74427, मॉरीशस
Address : World Hindi Secretariat, Swift Lane, Forest Side 74427, Mauritius
फ़ोन/Phone : (230) 676 1196
फ़ैक्स/Fax : (230) 676 1224
इ-मेल/Email : info@vishwahindi.com
डेटाबेस/Database : www.vishwahindidb.com
वेबसाइट/Website : www.vishwahindi.com

श्री मनु शर्मा

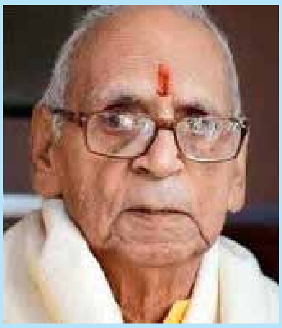

8 नवंबर, 2017 को वरिष्ठ साहित्यकार और हिंदी में सबसे बड़ा उपन्यास लिखनेवाले श्री मनु शर्मा का 89 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 1928 को अकबरपुर, फ़ैज़ाबाद में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पी.एच.डी., हिंदी में एम.ए. तथा गोरखपुर वि.वि. से डी.लिट. की उपाधि प्राप्त की। आपने बनारस के डी.ए.वी. कॉलिज में आदेशपालक के रूप में कार्य किया तथा एक पुस्तकालय में कार्यरत रहे। आपको उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के 'लोहिया साहित्य सम्मान', केंद्रीय हिंदी संस्थान के 'सुब्रमण्यम भारती पुरस्कार' तथा उत्तर प्रदेश सरकार के प्रतिष्ठित 'यश भारती सम्मान' आदि से सम्मानित किया गया। आपने लगभग 18 उपन्यास, 7 हज़ार से अधिक कविताएँ और 200 से अधिक कहानियाँ लिखीं हैं। 70 के दशक में आप बनारस से निकलनेवाले 'जनवार्ता' में प्रतिदिन एक 'कार्टून कविता' लिखते थे। आपने 8 खण्डों वाला सबसे बड़ा उपन्यास 'कृष्ण की आत्मकथा' की रचना की। आपकी रचनाओं में 'छत्रपति', 'तीन प्रश्न', 'द्रोपदी की आत्मकथा', 'द्रोण की आत्मकथा', 'कर्ण की आत्मकथा', 'गांधारी की आत्मकथा', 'शिवाजी का आशीर्वाद', 'एकलिंग का दीवान', 'मरीचिका', 'गांधी लौटे', 'विवशता', 'लक्ष्मणरेखा', 'अभिशप्त कथा' जैसे उपन्यास, 'पोस्टर उखड़ गया', 'मुंशी नवनीत लाल', 'महात्मा', 'लंगड़ा हाजी', 'पत्ता टूटा डाल से', 'अंततः सलीब', 'पक्का नं. 13', 'गुमशुदा', 'बंधन-मुक्ति', 'स्पर्श रोमांस', 'रोशनी कहाँ गई ?', 'बर्फ़ नाम सत्य है', 'दीक्षा', 'एक माँ मरी है', 'लक्ष्मण रेखा', 'अश्रव्य चीखें' जैसे कहानी-संग्रह, 'खूँटी पर टँगा वसंत' जैसा कविता-संग्रह, 'उस पार का सूरज' जैसा निबंध-संग्रह शामिल हैं।

साभार : भारत डिस्कोवरी.ऑर्ग

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

संपादकीय

हिंदी को वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित करने के प्रयास वर्षों से किये जा रहे हैं। उसके सकारात्मक परिणाम भी परिलक्षित हो रहे हैं। हिंदी हर दृष्टि से अंतरराष्ट्रीय भाषा बनने की क्षमता रखती है, आवश्यक है कि बढ़ती एवं नित बदलती तकनीक के दौर में वह प्रासंगिक बनी रहे। आनेवाले दिनों में संसार की दस सक्षम भाषाओं में हिंदी एक अवश्य रहेगी, ऐसा तमाम भाषा वैज्ञानिकों का मत है। जब हम प्रवासी भारतीयों और भारतीयों की तुलना करते हैं तब पाते हैं कि प्रवासियों के मन में हिंदी को लेकर आत्मविश्वास और उसके सुखद भविष्य की मंगल कामना एवं ललक अधिक है, जबकि अधिकांश भारतीयों में आत्मविश्वास की कमी एवं हीनताबोध भरा पड़ा है।

हिंदी की संरचनात्मक विशेषताओं पर जब ध्यान जाता है तब हम पाते हैं कि हिंदी एक संतुलित भाषा है, जिसमें विश्लेषण एवं संश्लेषण की अपार क्षमता विद्यमान है जबकि दुनिया की तमाम भाषाओं में दोनों विशेषताएँ नहीं हैं। चीनी, ग्रीक एवं संस्कृत में भी दोनों विशेषताएँ नहीं हैं। हिंदी की एक विशेषता यह है कि वह आगत शब्दों को आत्मसात कर अपनी प्रकृति के अनुरूप उन्हें ढाल लेती है। उसकी एक और विशेषता है जहाँ अक्षर को अधिक महत्व दिया जाता है ध्वनि को कम। आज के तकनीकी युग में हिंदी के माध्यम से प्रौद्योगिकी का विकास संभव है। जापान, चीन, रूस, इसराइल, जर्मनी, फ्रांस आदि देशों का तकनीकी विकास स्वभाषा के माध्यम से ही हुआ है; यह बात आम भारतीयों के गले नहीं उतरती।

भाषा और संस्कृति के प्रति हमारा तटस्थ एवं उदासीन रवैया तथाकथित 'विश्वभाषा' के पीछे अंधी दौड़ में शामिल होने का प्रमुख कारण बन गया है। हिंदी को योजनाबद्ध तरीके से शिक्षण एवं शिक्षणेतर गतिविधियों से बाहर करने की एक गहरी साज़िश चल रही है। उपनिवेशी मानसिकता से बाहर निकलने में 'विश्वभाषा' का महाभूत सामने खड़ा हो जाता है। इस संकट से मुकाबला करने के लिए एकजुट होकर पूरी निष्ठा एवं प्रतिबद्धता के साथ प्रयत्नशील होना पड़ेगा और निरंतर कुछ करते रहने का शुभ संकल्प अपने अन्तर्मन में जागृत करना ही होगा।

संख्याबल में हिंदी चीनी (मंदारिन) के बाद सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिंदी का विकास भारत की अनेक आंचलिक बोलियों के संयोग से हुआ है। संस्कृत इसकी जननी है। भारत की लगभग सभी भाषाओं की उद्गम स्थली संस्कृत रही है। अत: हिंदी का इन सभी भाषाओं से अन्तर्संबंध रहा है। दक्षिण भारत की भाषाओं में भी हिंदी के समानार्थी और समान उच्चारण वाले शब्दों की भरमार है। भारत से बाहर जाने वाले प्रवासी भारतीय भी अपने साथ भाषा और संस्कृति की सौगात ले गये, जो आज वहाँ जन साधारण के बीच विद्यमान है। आमजन श्रमिक और मज़दूर की झोली से निकल कर आज हिंदी विश्वमंच पर एक प्रतिनिधि भाषा के रूप में अपनी पहचान बना चुकी है। खुली अर्थव्यवस्था ने दुनिया को एक बाज़ार में तब्दील कर दिया है। भारत की उन्नत अर्थव्यवस्था विश्व के लिए आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। तमाम विदेशी कम्पनियों के आगमन से श्रमिक मज़दूर और इंजीनियर, प्रबंधक और मालिक के बीच संवाद भी भाषा के रूप में हिंदी का सुखद भविष्य दिखाई दे रहा है। किसी ज़माने में भारत को जानने-समझने के लिए विदेशियों ने हिंदी एवं संस्कृत सीखी। आज बदली हुई परिस्थिति में संवाद एवं व्यवहार के लिए हिंदी की अनिवार्यता स्वत: सिद्ध है।

हिंदी में जोड़ने की प्रबल प्रवृत्ति है तथा यह विश्व भाषा बनने की प्रकृति के सर्वथा अनुकूल भी है। उसके विकास की अनन्त दिशाओं की असीम संभावनाएँ हैं। बस, आवश्यकता इस बात की है कि एक व्यवस्थित एवं कारगर कार्य योजना बनाई जाए और क्रमबद्ध विकास सुनिश्चित किया जाए। हिंदी की सांस्कृतिक विरासत, जिसमें लोक और शास्त्र की स्वस्थ परंपरा समाहित है तथा यह संपूर्ण विश्व के बीच परस्पर संबद्धता की दृष्टि भी देती है। संस्कृति में ठहराव नहीं होता गतिशीलता और प्रवाह के द्वारा वह समाज की हित चिंता करती है। हित चिंता की भाषा हिंदी ही हो ऐसे सार्थक प्रयत्न किए जाने की ज़रूरत है।

हिंदी की संतानों के प्रति उसका मातृ भाव तथा आनेवाली पीढ़िओं के लिए उस भाव का प्रसार उसकी सतत साधना का पथ आलोकित करे। सातत्य के बिना भविष्य की कार्य योजना विखण्डित हो सकती है, क्योंकि किसी भी संस्कृति का मूल कितना भी श्रेष्ठ हो, यदि उससे तादात्म्य स्थापित न किया जाए, उसे जिया न जाए तो वह प्रभावशून्य एवं कुंठित हो जाता है। उसकी जीवन्तता को बनाए रखने के लिए उसकी उर्वरता की जाँच निरंतर किए जाने की आवश्यकता पड़ती है। संस्कृति की दूरगामी दृष्टि तात्कालिक महत्व को उतना ध्यान में नहीं रखती, किन्तु परखती ज़रूर है, क्योंकि उसका अंतिम ध्येय सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा होता है, सत्ता मुखापेक्षी होना नहीं।

हमारी सांस्कृतिक अस्मिता की पहचान बनाए रखने के लिए भाषा को अपनी संकल्प शक्ति के साथ हस्तक्षेप करने एवं प्रतिरोध के लिए सतत तैयार रहना होता है। हिंदी इसके लिए तैयार है तथा सांस्कृतिक चेतना की संवाहिका बन निष्काम भाव से संपूर्ण सृष्टि के जड़-चेतन में एकात्म भाव को कायम कर विश्व को टूटने-बिखरने से बचाने में सर्वथा सक्षम है।

प्रो. विनोद कुमार मिश्र
महासचिव

अंतरराष्ट्रीय हिंदी एकांकी प्रतियोगिता

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस द्वारा विश्व हिंदी दिवस 2018 के उपलक्ष्य में एक **अंतरराष्ट्रीय हिंदी एकांकी प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता को पाँच भौगोलिक क्षेत्रों के आधार पर बाँटा गया। 10 जनवरी, 2018 को विश्व हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर परिणामों की घोषणा की गई। प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र के विजेता को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

परिणाम प्रस्तुत हैं:

Printed by **Cathay Printing Ltd.**, La Tour Koenig Industrial Zone, Pointe aux Sables, Mauritius Tel : +230 234 2668